बांग्ला भक्ति साहित्य और गोविन्ददास

डॉ. गोविन्द प्रसाद वर्मा
(सहायक आचार्य)
हिंदी विभाग, मानविकी एवं भाषा संकाय
महात्मा गाँधी केंद्रीय विश्वविद्यालय
मोतिहारी (बिहार)- 845401
Email: govindprasadverma@mgcub.ac.in

स्नातक (प्रतिष्ठा) हिंदी, छठा सेमेस्टर
प्रश्नपत्र: भारतीय भक्ति साहित्य (HIND3025)

विषय-सूची

- बांग्ला भक्ति साहित्य का सामान्य परिचय
- गोविन्ददास : जीवन परिचय एवं रचनाएँ
  - जीवन परिचय
  - रचनाएँ
- गोविन्ददास का कवि रूप
- कथ्य पक्ष
  - प्रेम का चित्रण
  - भक्ति भावना
- शिल्प पक्ष
- निष्कर्ष
- संदर्भ-ग्रंथ-सूची

❖ बांग्ला भक्ति साहित्य का सामान्य परिचय

- बांग्ला साहित्य में भक्ति आंदोलन का सूत्रपात चैतन्य महाप्रभु (15 वीं शताब्दी) के आविर्भाव के साथ माना जाता है |
- बांग्ला साहित्य में, भक्ति के आंदोलन बनने में पाँच स्रोतों की भूमिका को महत्त्वपूर्ण माना जाता है | पहला- 'महाभारत' के रचनाकाल अर्थात् कई शताब्दियों ईसा पूर्व से कृष्ण की आराधना का चले आना | दूसरा- वैदिक परंपरा के आधार पर पशुओं के देवता के रूप में विष्णु की पूजा प्रचलित थी और विष्णु मधुस्रोत के देवता भी थे |
- तीसरा – चैतन्य पूर्व युग के कवि-लेखकों ने भक्ति कविताओं की रचना की | चौथा- बंगाल के तांत्रिक बौद्धगान और दोहा, जो सामान्यतः चर्यापद के नाम से जाने जाते हैं |

- पाँचवाँ - बंगाल के बौद्ध मत में लोकनाथ की पूजा का प्रचलन और उसमें अहिंसा तथा सभी सभी जीवों पर दया का उल्लेख |
- कुछ विद्वान् 12वीं शताब्दी उतरार्द्ध के जयदेव से बांग्ला में भक्ति का प्रादुर्भाव मानते हैं, तो कुछ बौद्धों के 'चर्यापदों' से | सुकुमार सेन ने लिखा है – "बांगला में वैष्णव पदावली का जन्म हुआ- जयदेव की पदावली 'गीत गोविन्द' से |" सुशील कुमार डे का स्पष्ट मत है कि चैतन्य महाप्रभु से भक्ति का पूर्ण उन्मेष दिखाई देने लगता है |
- इससे स्पष्ट होता है कि भक्ति का बीज अनेक स्रोतों से होता हुआ जयदेव में पौधे के रूप में और आगे चलकर चैतन्य में पूर्ण वृक्ष का स्वरूप ग्रहण कर लेता है |

- बांग्ला भक्ति में वैष्णव संप्रदाय सबसे प्रमुख रहा है | उसमें भी कृष्ण काव्यधारा ज्यादा सशक्त रही है | इस धारा पर जयदेव और विद्यापति का प्रभाव रहा है | इसके साथ-साथ रामकाव्य धारा की भी रचनाएँ होती रही हैं |
- वैष्णव संप्रदाय के अलावा शैव संप्रदाय, शाक्त मत और सूफी काव्यधारा आदि की भी परंपरा मिलती है |
- चैतन्य महाप्रभु ने भ्रमण के माध्यम से पूरे देश में वैष्णव भक्ति का प्रचार-प्रसार किया | उन्होंने अपनी भक्ति द्वारा समाज में व्याप्त जाति-पाति, अमीर-गरीब, ऊँच-नीच, हिंदू-मुसलमान आदि भेद-भाव को दूर करने की कोशिश की |

- बांग्ला वैष्णव भक्ति में चैतन्य महाप्रभु के साथ-साथ षड् गोस्वामियों- श्री रूप, सनातन, भट्ट रघुनाथ, श्री जीव, गोपाल भट्ट, दास रघुनाथ की भी महत्त्वपूर्ण भूमिका मानी जाती है |
- षड् गोस्वामियों ने जहाँ एक तरफ भक्ति के प्रचार-प्रसार में योगदान दिया, वहीँ दूसरी तरफ सैद्धांतिक रचनाओं के द्वारा भक्ति का दार्शनिक स्वरूप भी स्थापित किया |
- बांग्ला भक्ति साहित्य के प्रमुख कवियों में – कृत्तिवास, मालाधर बसु, चंडीदास, चैतन्य महाप्रभु, षड् गोस्वामी, ज्ञानदास, गोविन्ददास, बलरामदास आदि प्रमुख रहे हैं |

❖ गोविन्ददास : जीवन परिचय एवं रचनाएँ

▪ जीवन परिचय

- गोविन्ददास का जन्म सन् 1540 ई. के आसपास माना जाता है | इनके पिता का नाम चिरंजीव था | इनके बड़े भाई का नाम रामचंद्र था, जो एक कवि थे | इनकी पत्नी का नाम महामाया और बेटे का नाम दिव्य था |
- रामचंद्र और गोविन्ददास दोनों श्रीनिवासाचार्य से दीक्षित हुए थे | वैष्णव श्रीनिवासाचार्य को गुरु बनाने से पहले दोनों भाई शाक्त मतानुयायी थे |
- गोविन्ददास की मृत्यु सन् 1620 ई. में हुई |

रचनाएँ

- गोविन्ददास को कविराज के नाम से भी जाना जाता है – "गोविन्ददास इसलिए कविराज नहीं थे कि वह वैद्य थे, उन्हें कवि श्रेष्ठ की उपाधि मिली थी इसीलिए वे कविराज कहलाते थे |" (सुकुमार सेन) उन्हें 'कविराज' की उपाधि जीव गोस्वामी ने दिया था |
- गोविन्ददास को संस्कृत का अच्छा ज्ञान था, फिर भी उन्होंने देशभाषा ब्रजबुली में अधिकांश रचनाएँ की |
- उनकी सर्वश्रेष्ठ रचना 'गौरचंद्रिका' मानी जाती है | उसमें 728 पद हैं | इसके अलावा 'प्रेम विलास,' भक्ति रत्नाकर' और 'भक्तमाल' भी इनकी रचनाएँ मानी जाती हैं |

❖ गोविन्ददास का कवि रूप

- गोविन्ददास राधा-कृष्ण प्रेमलीला के अद्‌भुत गायक हैं | उन्होंने राधा-कृष्ण की परस्पर प्रेम भावना, समर्पण भाव और वियोग दशाओं का मार्मिक वर्णन किया है |
- चैतन्योत्तर युग के वैष्णव कवियों ने – 'सखी भावना ही मानव जनम की चरम साधना है |' – को आत्मसात किया | इसका आशय यह है कि आत्मा के अस्तित्व को भूलकर कृष्ण-राधा में अपने को विलीन करना | परंतु, गोविन्ददास में ऐसी तल्लीनता नहीं दिखाई पड़ती |
- गोविन्ददास लीला दर्शन के साथ-साथ भाषा-अलंकरण, भाव-गाम्भीर्य और छंद कुशलता को भी लेकर चलते हैं |
- उनके पदों में अगाध भक्ति के साथ सजीव कल्पना शक्ति का सम्मिश्रण दिखाई पड़ता है |

❖ कथ्य पक्ष

▪ प्रेम का चित्रण

- गोविन्ददास के पदों में देह और शारीरिक सौंदर्य, मनोभावना से अधिक महत्त्वपूर्ण हैं | उन्होंने राधा और कृष्ण के परस्पर रूप-माधुरी का वर्णन समान रूप से किया है |

- उनके रास के पद वैष्णव साहित्य में अतुलनीय हैं | उनके कृष्ण पंचम सुर में ऐसी बांसुरी बजाते हैं कि गोपियाँ अपने- अपने घरों से बाहर आ जाती हैं –

  "हेरत राति ऐसी भाति / श्याम मोहन मदने माति
  मुरली गान पंचम तान / कुलवती चित चोरणी |"

- उनकी प्रेम दिवानी राधा, कृष्ण प्रेम में पगने के बावजूद अदम्य आत्मविश्वास और कष्टों को सहन करनी की क्षमता से संपन्न है | वह मरण के सहारे भी मिलन की आकांक्षा रखती है –

  " ए सखि विरह मरण निरछंद |
  ऐछने मिलइ जब गोकुल चंद ||"

भक्ति भावना

- गोविन्ददास राधा-कृष्ण के माध्यम से ईश्वर को पाना चाहते हैं | उनके यहाँ राधा- कृष्ण का प्रेम जीव और ईश्वर के बीच प्रेम की अभिव्यक्ति है |

- ईश्वर को पाने के लिए जीव अनेक बाधाओं से जूझता है | उनका राधा रुपी प्रेमी भी वैसा ही है - *"माथहि तपन तपत पथ बालुक / आतप दहन विचार*

ननीक पुतलि तनु चरण कमल जनु / दीनहि कयल अभिसार ||"

(ग्रीष्म ऋतु में तप्त हुए वातावरण में राधा अपने प्रिय से मिलने आती है | पथ पर पड़ी हुई रेत से वह तप गयी है | राधा का कोमल तन और कोमल चरण उस तप्त रेत को पार करता है |)

- राधा की प्रेम आराधना निष्काम भाव से कृष्ण को अर्पित है | वह अपने आत्मदान से कृष्ण में अरुणिम कांति की कामना करती है | वह अपने आराध्य प्रेम में अन्य गोपियों को भी स्थान देती हैं |

❖ शिल्प पक्ष

- गोविन्ददास ने ब्रजबुली (बांग्ला भाषा का ही एक रूप) में अनेक रचनाएँ की हैं, जबकि वे संस्कृत के अच्छे ज्ञाता थे |
- उनका ब्रजबुली और मैथिली की अलंकर-योजना पर असाधारण अधिकार था |
- उन्हें काव्यशास्त्रीय परंपरा की भी अच्छी जानकारी थी | उनकी काव्यभाषा, अलंकार प्रयोग, रूप निर्माण की क्षमता बेजोड़ थी |
- गोविन्ददास के पद ध्वनि और अर्थ क्षमता से अनुनादित हैं |

❖ निष्कर्ष

- बांग्ला में भक्ति का बीज अनेक स्रोतों से होता हुआ जयदेव में पौधे के रूप में और आगे चलकर चैतन्य में पूर्ण वृक्ष का स्वरूप ग्रहणकर लेता है |
- बांग्ला भक्ति में वैष्णव संप्रदाय सबसे प्रमुख रहा है | उसमें भी कृष्ण काव्यधारा ज्यादा सशक्त रही है | इस धारा पर जयदेव और विद्यापति का प्रभाव रहा है |
- गोविन्ददास राधा-कृष्ण प्रेमलीला के अद्भुत गायक हैं | उन्होंने राधा-कृष्ण की परस्पर प्रेम भावना, समर्पण भाव और वियोग दशाओं का मार्मिक वर्णन किया है |
- वे राधा-कृष्ण के माध्यम से ईश्वर को पाना चाहते हैं | उनके यहाँ राधा- कृष्ण का प्रेम जीव और ईश्वर के बीच प्रेम की अभिव्यक्ति है |
- उन्होंने देशभाषा ब्रजबुली में अधिकांश रचनाएँ की | उनकी सर्वश्रेष्ठ रचना 'गौरचंद्रिका' मानी जाती है |

❖ संदर्भ-ग्रंथ–सूची

- बांग्ला साहित्य का इतिहास : सुकुमार सेन, (अनु. निर्मला जैन), साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली
- बँगला साहित्य का संक्षिप्त इतिहास : डॉ. सत्येन्द्र, प्रकाशन शाखा, सूचना विभाग, उत्तर प्रदेश
- बांग्ला और उसका साहित्य : हंस कुमार तिवारी, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली
- www. egyankosh.ac.in

धन्यवाद !